

# Bihar Board Class 11th Hindi Book Solutions पद्य Chapter 12 मातृभूमि

[biharboardsolutions.com/bihar-board-class-11th-hindi-book-solutions-padya-chapter-12](http://biharboardsolutions.com/bihar-board-class-11th-hindi-book-solutions-padya-chapter-12)

## मातृभूमि पाठ्य पुस्तक के प्रश्न एवं उनके उत्तर

प्रश्न 1.

यह कविता किसे संबोधित है?

उत्तर-

यह कविता माता, मातृभूमि और मातृभाषा को सम्बोधित है।

प्रश्न 2.

कवि ने स्वयं को मेले में खोए बच्चे-सा दौड़ना कहा है। उन्होंने अपनी गति की तुलना समुद्र से की है। कवि ने ऐसी तुलना क्यों की है? काव्य पंक्तियों को उद्धृत करते हुए स्पष्ट करें।

उत्तर-

कवि ने स्वयं को मेले में खोए बच्चे-सा दौड़ता कहा है। उन्होंने अपनी गति की तुलना समुद्र से करते हुए कहा है कि-“और मैं मेले में खोए बच्चे-सा दौड़ता हूँ तुम्हारी ओर जैसे वह समुद्र जो दौड़ता आ रहा है छाती के सारे बटन खोले हहाता।”

कवि आर्थिक उदारीकरण के आधुनिक युग में सामाजिक विषमता के मेले में खो गया है। मेले में खोए बच्चे को अगर उसकी जननी का अक्स अकस्मात दिखाई पड़े तो उत्कट अभिलाषा से आवेशित होकर वह तूफानी वेग से अपनी माता की ओर दौड़ पड़ता है-अपनी मैया के ममता भरी आँचल के शीतल छाँव में। समुद्री तूफान को कोई सीमा या दिशा रुकावट नहीं डाल सकती वैसे ही माँ और शिशु का मिलन कवि द्वारा बच्चे की गति की तुलना समुद्री गति से कर कवि ने वात्सल्य की वाटिका को गौरवान्वित किया है।

वस्तुतः कवि के दृष्टिकोण, सोच और संवेदना एक स्वावलम्बी, समृद्ध और समतामूलक समाज का मूर्त रूप देखना चाहता है और आशा की किरण देखते ही समुद्री वेग से अपने लक्ष्य को पाने के लिए दौड़ता है। कवि वैश्विकता से उपजे घोर आर्थिक विषमता के बीच अपने को मेले में खोए बच्चों के रूप में पाता है।

प्रश्न 3.

‘वे मजदूर सो सोख रहे हैं बारिश मिट्टी के ढेले की तरह’ कवि ने मजदूरों के लिए ऐसी उपमा क्यों दी है?

**BiharBoardSolutions.com**

उत्तर-

कवि ने मजदूर को मिट्टी के ढेले सादृश्य प्रतिपादित किया है। इस कविता में आर्थिक विषमता पर करारा व्यंग किया गया है। मिट्टी के ढेले के समान मजदूर अतृप्त रहता है। मिट्टी के ढेले पर बारिश पड़ने पर वह सोख लेता है उसी प्रकार मजदूर जो कि आर्थिक विपन्नता से भरे हैं, थोड़ी सी मजदूरी से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते। आर्थिक उदारीकरण के वर्तमान युग में आर्थिक गति की बाढ़ सी आ गई है, परन्तु मजदूरों का उनका उचित मेहताना भी नहीं मिलता; वे आर्थिक विषमता से अभिशप्त है।

वैश्विकता के इस युग में वर्षा (अर्थ) का अधिक से अधिक हिस्सा हड़प लेने की मनसा लिए हमारे प्रतिनिधि (साँद) खुलेआम विचरण कर रहे हैं। हमारे परिवेश में उपलब्ध साधन केवल दबंगों के निमित्त ही रह जाता है। मजदूर तो कोमल हाड़-मांस से सृजित है परन्तु अभिशप्त है, वर्षा की बूंदे सोखने के लिए। जब तक वे वर्षा में भीगे नहीं तबतक उनके परिवार की जठराग्नि शान्त नहीं होगी। मजदूरी रूपी वर्षा तो उनके परिवार में ऐसे ही विलीन हो जाता है जैसे वर्षा की बूंदों को मिट्टी की ढेले सोख लेता है।

प्रश्न 4.

नीचे उद्धृत काव्य पंक्तियों का मर्म उद्घाटित करें

“घर के आँगन में वो नवोढ़ा भींगती नाचती और काले पंखों के नीचे कौवो के सफेद रोएँ तक भीगते और इलाइची के छोटे-छोटे दाने इतने प्यार से गुत्थमगुत्था ये सब तुम्ही तो हो”

उत्तर-

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी की प्रगतिशील यथार्थवादी भावधारा के ध्वजावाहक कविवर अरुण कमल रचित ‘मातृभूति’ शीर्षक कविता से उद्धृत हैं। कवि व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए जड़ और चेतन दोनों में मातृभूमि की तस्वीर देखता है।

वर्षा प्रकृति का वरदान है जिससे पृथ्वी पर जीवन का संचार होता है। परन्तु वर्षा में घर के आँगन में नव नवेली दुल्हन भींगती है और कौओं के उपरी पंख भिगने के बाद आवरण से ढंका सफेद रोएँ भी भीग गये हैं। इलाइची के दाने भी वर्षा की बूंदों से तृप्त होकर आपस में गुथमगुत्था हो गए हैं। इन सभी रूपों में “हे मातृभूमि तुम्हीं तो प्रतिबिंबित होती हो।”

कवि ने समाज में विभाजित आर्थिक विषमता जो कि क्रमशः उच्चवर्ग, मध्यम वर्ग तथा निम्नवर्गों की दशा और दिशा की ओर संकेत किया है।

प्रश्न 5.

“आज जब भीख में मुट्टी भर अनाज भी दुर्लभ है तब चारों तरफ क्यों इतनी भाप फैल रही है गर्म रोटी की”-यह कैसी भाप है? इस भाप के इतना फैलने में किस तरह की व्यंजना है?

[BiharBoardSolutions.com](http://BiharBoardSolutions.com)

उत्तर-

कवि समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता से व्याकुल है। वह परोक्ष रूप से हमारी शोषणपूर्ण तथा घोर विषम अर्थव्यवस्था पर की करारी चोट की है। साथ ही साथ हमें आर्थिक विषमताजन्य स्थिति और परिस्थिति को समाप्त करने की दिशा में सोचने के लिए वाध्य करती है।

कवि का इशारा आर्थिक उदारीकरण की ओर है। कवि कहना चाहता है जब भीख माँगने आशय है कि औद्योगिक क्रान्ति, बौद्धिक जागरण और वैश्विकता के इस दौड़ में मानवीय संवेदना स्वयं तक सिमट कर रह गई है। बौद्धिक छल-बल के बीच मानव कराह रही है।

प्रश्न 6.

कई दिनों से भूखे-प्यासे कवि को माँ किस रूप में दिखलाई पड़ती है? कवि ने किन स्थानों के बच्चों का उल्लेख कविता में किया है, और क्यों?

उत्तर-

कविवर अरुण कमल ने विपन्नता की मार से त्रस्त भूखे बच्चों की मार्मिक चित्रण किया है। भूखे बच्चे माँ की ओर मेवा, अखरोट, मखाना और काजू अर्थात् सुख समृद्धि देने वाली करुणामय देवी के रूप दिखलाई पड़ती है।

कवि ने प्रकृति के क्रूर मजाक का शिकार आन्ध्रप्रदेश के किसानों के बच्चे, उड़ीसा के कालहाँड़ी के बच्चे और झारखण्ड के पलामू के बच्चे की दारुण दशा का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। प्रकृति के श्राप से अभिशप्त इन क्षेत्रों में पानी का तल काफी नीचे और जमीन ऊपर होने के कारण इन्हें 'मौत का दूत' के रूप में दुनियाँ देखती है। कवि चाहता है कि इन क्षेत्रों का भी उद्धार हो और वहाँ भी विकास की रोशनी पहुँचाई जाय।

प्रश्न 7.

“ये यतीम ये अनाथ ये बंधुआ  
इनके माथे पर हाथ फेर दो माँ

इनके भीगे केश सँवार दो अपने श्यामल हाथों से”

-इन पंक्तियों का अर्थ लिखें। कवि ने यहाँ 'भीगे केश' क्यों लिखा है? अपनी कल्पना से उत्तर दें।

उत्तर-

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी की प्रगतिशील यथार्थवादी विचारधारा के कवि अरुण कमल रचित 'मातृभूमि' शीर्षक कविता से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवि का दृष्टिकोण, सोच और संवेदना में दृढ़ता, गहराई, व्यापकता और अमोघता परिलक्षित होती है।

कवि कहना चाहता है कि मामूली कर्ज के बदले में पराधीन बेगारी की जिंदगी जीने के लिए अभिशप्त अपने यतीम और अनाथ बच्चों को अपने श्यामल हाथों से आशीर्वाद देकर उनको बंधुआ मजदूरी से मुक्त कराकर उसके जीवन को सँवार दो हे मातृभूमि।

[BiharBoardSolutions.com](http://BiharBoardSolutions.com)

कवि ने मातृभूमि से अपनी हाथों से 'भीगे केश' सँवारने का अनुरोध किया है। 'भीगे केश' से कवि का अभिप्राय 'गरीबी का बवंडर में उलझी जिंदगी' से है। औद्योगीकरण, बौद्धिक जागरण और वैश्विकता के चक्रव्यूह में शोषित, दलित मानवता को पीसते देखकर कवि व्यथित हो उठा है। आधुनिक जीवन-शैली में जो त्वरित गति रो परिवर्तन हो रहा है उसका दुःप्रभाव समाज के साधनहीन वेवश गरीब मजदूर और किसानों पर पड़ रहा है।

बौद्धिक छल-बल के कारण व्यवहार और विचार में कहीं साम्यता नहीं है। समाज का एक बड़ा वर्ग कृषि जमींदारों तथा आधुनिक औद्योगिक जमींदारों की चक्की के दो पाटों के बीच उनकी स्वार्थपरता का शिकार हो रहा है। उनकी जिन्दगी 'भीगे केश' की भाँति इलझ कर खुद तक सिमट गई सी प्रतीत होती है।

प्रश्न 8.

'तुम किसकी माँ हो मातृभूमि'-इस प्रश्न का मूल भाव आपके विचार में क्या है?

उत्तर-

'तुम किसकी माँ हो मेरी मातृभूमि' के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि वैश्विकता के इस आधुनिक युग में आज समाज का एक बड़ा तबका यतीम अंत अनाथ सदृश कृषि अथवा औद्योगिक बंधुआ मजदूर बनने को अभिशप्त है। समाज का एक तबका विकास की बाढ़ से सिंचित है तो दूसरा तबका शोषण, उत्पीड़न तथा भुखमरी का शिकार है।

वह मातृभूमि से पूछता है कि तुम किसकी माँ हो-सम्पन्नता के साँढ़ की या निर्धनता रूपी बकरा की। एक तरफ विकास का गगा बह रही है तो दूसरे तरफ साधनहीनता का रेगिस्तान। वस्तुतः कवि कहना चाहता है कि मानवीय जीवन में हम विकास की अनगिनत सोपानों पर बढ़े परन्तु बौद्धिक छल-बल के बीच मानवता पीस रही है, कराह रही है। संक्रमण के इस काल में मातृभूमि को ही फैसला लेना है ताकि मानवता खुशियों से लहलहा उठे।

प्रश्न 9.

और मैं भीज रहा हूँ

नाच रही धरती नाचता आसमान मेरी कील पर नाचता-नाचता

मैं खड़ा रहा भीजता बीचों-बीच।

-इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें।

उत्तर-

कविवर अरुण कमल ने समाज में व्याप्त विषमता पर करारा चोट किया है। कवि आसमान और धरती के बीच खड़ा भीग रहा है। समाज का एक वर्ग अट्टालिकाओं और महलों के साये में विलासी जिन्दगी बिता रहा है तो दूसरा वर्ग आश्रय देने में असमर्थ झोपड़ी में शोषण पूर्ण तथा घोर विषम अर्थव्यवस्था में जी रहा है। कवि दोनों के बीच का केन्द्र अर्थात् मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। कवि का भाव दोनों के बीच अर्थात् धरती और आसमान के बीच 'भीजना' है। कवि की संवेदना में व्यापक गहराई, अक्षुण्ण दृढ़ता, व्यापकता और अमोघता यथार्थ रूप में परिलक्षित होता है।

प्रश्न 10.

कविता में कवि ने स्वयं के भींगने को 'भीजना' कहा है जबकि सिंधु

घाटी का चौड़े पट्टे वाला साँढ़, बच्चों के केश, नवोढ़ा या कौए के पंखों

के लिए 'भींगना' ऐसा क्यों? क्या इसका कोई भौगोलिक भाषाई आधार है?

उत्तर-

कविता में कवि ने सिंधु घाटी का चौड़े पट्टे वाला साँढ़ को कृषि और औद्योगिक जमींदार तथा बच्चे, नवोढ़ा या कौए को यतीम, अनाथ और बंधुआ मजदूर का प्रतीक और खुद को दोनों के बीच अर्थात् मध्यम वर्ग का प्रतिनिधि के रूप में रेखांकित किया है।

कवि ने स्वयं के लिए 'भीजना' कहकर अपने गँवई भाषा भोजपुरी के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित किया है। सिंधु घाटी की सभ्यता प्राचीन काल से ही समुन्नत एवम् सपन्नता के शिखर पर है। कवि का भोजपुर क्षेत्र अभी भी विकास की रोशनी से कोशों दूर है। दोनों क्षेत्रों के भौगोलिक और भाषाई आधार में जमीन और आसमान का अन्तर है।

प्रश्न 11.

शब्दों के प्रयोग में कवि अपनी पीढ़ी में अतिशय सावधान है। उसके सावधान शब्द प्रयोगों के कुछ उदाहरण कविता से चून कर उनका अर्थ स्पष्ट करें।

उत्तर-

प्रगतिशील यथार्थवादी कवि अरुण कमल ने शब्दों के प्रयोग में परंपरा से अपना एक जीवंत और स्वतंत्र संबंध बनाया है। उनके शब्दों में हिन्दी और भारतीय धातु और प्रकृति है, तो वैश्विक उसका परिवेश और प्रत्यय। शब्दों के प्रयोग में कवि अपनी पीढ़ी में अतिशय सावधानी बरतने के कारण इनकी उपलब्धियाँ चढ़ती दोपहरी के समान है। भोजपुरी शब्दों का कविता में अतिशय प्रयोग कर कवि ने अपनी गँवई भाषा के प्रति श्रद्धा अर्पित की है।

कवि के सावधान शब्द प्रयोगों के उदाहरण भीजता, बँक, हहाता, ओट, छेके, बारिश, नवोढ़ा, गुथमगुथा, खुबनियाँ, चौखट, श्यामल, धूसर, छप्परोँ, देहरी, टेक, बंधुआ, अनाथ, सँवार और तकती आदि हैं। जिसका अर्थ क्रमशः भीजना, आच्छादित, उल्कट अभिलाषा से भरना, हलचल पैदा करती, सहारा, आरक्षित, वर्षा, नई नवेली दुल्हन, एक दूसरे से गुंथा हुआ, एक प्रकार का मेवा, कमरा का निकास द्वारा, साँवला, धूल से भरा, झोपड़ी का छत, दरवाजा, सहारा, मामूली कर्ज के बदले पराधीन बेगारी जिन्दगी जीने के लिए अभिषप्त व्यक्ति, सजाना है।

प्रश्न 12.

इस कविता में 'माँ' और मातृभूमि की छवियाँ एक-दूसरे में घुल-मिलकर एकाकार हो जाती है। तथा देश और काल के पटल पर माँ की प्रतिमा व्याप्ति और विस्तार पा जाती है। इस दृष्टि से कविता पर विचार करें और एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर-

हिन्दी की प्रगतिशील यथार्थवादी भावधारा के उन्नायक कवि अरूण कमल ने 'मातृभूमि' कविता में आधुनिक भावबोध, सामयिक जीवनानुभव, संवेदना और कलात्मक उत्कृष्ट की प्राणाणिक और प्रभावशाली अभिव्यक्ति है। इस कविता में जननी, जनमभूमि की मातृ-प्रतिमाएँ बिना अधिदैविक अथवा धार्मिक-दार्शनिक प्रतिपत्तियों, आशयों या विवक्षाओं के, एक दुसरे में घुल-मिलकर एकाकार हो जाती हैं।

मातृभूमि के संदर्भ में कवि के वैचारिक बिन्दुओं की आधुनिक परिवेश में अनन्य प्रस्तोता सदृश दिखते हैं। इस कविता में भारतीय सामाजिक और आर्थिक विषमता का अतीत तथा वर्तमान के सन्दर्भ में व्यंगात्मक चित्र प्रतिबिंबित किया गया है। हमारी मातृभूमि अपनी समृद्धि तथा उत्कर्ष के कारण विश्व के तल पर अतुलनीय तथा अन्यतम वर्तमान समय सुख-समृद्धि के साध्य की प्राप्ति के लिए अपेक्षित साधनों के वहन का सुखद काल है जिसका समुचित उपयोग से इसका भविष्य भी सिद्धि और सफलता का स्वर्णिम काल होगा।

कवि जननी और जन्मभूमि से आग्रह करता है कि औद्योगिक क्रान्ति, बौद्धिक जागरण और वैश्विकता के इस युग में भी समाज का एक बड़ा तबका शोषित, दलित तथा दारुण जीवन जीने को अभिशप्त है, उसकी जिन्दगी सँवार दो माँ! माँ तो वात्सल्य की वाटिका होती है। जिससे उसके पुत्र चैन की नींद लेते हैं। कवि ममता की मंजूषा से आग्रह करता है कि हे माँ, करूणामयी छाँव में तुम्हारी संतानों को तुम्हारे अलावे कोई भी देख नहीं सकता, एक तुम ही हो जो इन्हें शान्ति के शिविर और स्नेह के सुख-सदन तक पहुँचा सकती हो। माँ को बच्चों के दुःख से द्रवित होना पड़ता है।

कवि कहना चाहता है बौद्धिक छल-बल के बीच माँ की संतानों का एक तबका आर्थिक उदारीकरण की चक्का में पिसकर कराह रहा है। संकट की इस घड़ी से मुक्ति की युक्ति के लिए अन्वेषण-कार्य करने के लिए कवि माँ से प्रार्थना करता है।

वस्तुतः कविवर अरूण कमल आधुनिक समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता, सामाजिक तनाव और वैमनस्यता को दूर करने के लिए माँ का आशीर्वाद चाहता है। उनका कहना है कि समाज के सारे अनर्थों की जड़ समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता और बौद्धिक छल-बल है। अगर हम प्रत्येक मनुष्य को अधिकार दें तो सारे अनर्थ एक ही साथ समाप्त हो जाएँगे।

[BiharBoardSolutions.com](http://BiharBoardSolutions.com)

हमें ऐसा समझना चाहिए कि भिन्न-भिन्न तबके के लोग एक दूसरे से भिन्न नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। जैसे-शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों में किसी भी अंग के पीड़ित अथवा आनंदित होने से पूरा शरीर पीड़ित अथवा आनंदित होता है, उसी प्रकार किसी भी तबका के पीड़ित तथा आनंदित होने से सम्पूर्ण भारतवासियों को पीड़ा अथवा आनन्द की अनुभूति होनी चाहिए।

अगर कोई तबका आहत हो जाए तो दूसरे तबके का कर्तव्य है कि उसके जख्मों पर स्नेह का लेप लगा दे तो आहतों को पीड़ा अनुभव न हो पाएगा। कवि भारतवासियों से संकीर्णता के दायरे से ऊपर उठकर अपने विशाल हृदय का परिचय देने की आशा करता है, ताकि गरीब और अमीर घुल-मिल-कर एकाकार हो जाएँ।

प्रश्न 13.

मातृभूमि कविता का भावार्थ लिखिए? [B.M.2009(A)]

उत्तर-

अपने समकालीन समाज के विद्रूप चेहरे को प्रस्तुत करने वाली कविता मातृभूमि है, जिसके यशस्वी रचनाकार अरुण कमल हैं।

यहाँ कवि भारत के बच्चों के उस वर्ग की चर्चा करता है जो प्राकृतिक आपदाओं में अपने माँ-बाप खो चुका है और वर्तमान में पेट भरने के लिए कहीं बाल मजदूरी या बंधुआ मजदूरी कर रहा है। इनके दुःखों का कहीं अंत नहीं। ये बच्चे ममता से वंचित हैं। इनके सिर पर छत नहीं है। वर्षा में भीगते हुए ये अपना शोषण करा रहे हैं। कवि का 'भीगे केश' का उपयोग इस संदर्भ में है कि मौसम की मार से इनका बचाव करने वाला कोई नहीं। ये बच्चे ममता से पूर्णतः वंचित हैं। इन्हें भी स्नेह, प्यार, ममत्व भरा स्पर्श चाहिए, जो मातृभूमि ही दे सकती है। इसलिए मातृभूमि से कवि इन बच्चों के जीवन में प्रेम, आशा, ममता का संचार करने का आग्रह करता है।

### मातृभूमि भाषा की बात

[BiharBoardSolutions.com](http://BiharBoardSolutions.com)

प्रश्न 1.

निम्नलिखित शब्दों के वचन परिवर्तित करें

पौधों, रास्ता, बकरियाँ, पेड़, मजदूर, पंखों, कौवों, रोटी, रूमाल, तशतरी, गिलास, छप्परोँ, हाथों, किसानों।

उत्तर-

पौधों-पौधा, रास्ता-रास्ते, बकरियाँ-बकरी, पेड़-पेड़ों, मजदूर-मजदूरों, पंखों-पंख, कौवों-कौवा, रोटी-रोटियाँ, रूमाल-रूमालें, तशतरी-तशतरियाँ, गिलास-गिलासों, छप्परोँ, छप्पर, हाथों-हाथ, किसानों-किसान।

प्रश्न 2.

अनाथ शब्द में कौन-सा समास है?

उत्तर-

अनाथ शब्द में न समास है। नञ् समाज तत्पुरुष समास का वह भेद है जिसका प्रथम पद न, ना, अन् जैसे निषेधवाचक होता है।

- अनाथ = न, नाथ
- अनिष्ठ = न, इष्ट
- अनजाना = न, जाना आदि।

प्रश्न 3.

कविता में उनपंक्तियों को चुनें जिनमें निजवाचक सर्वनामों का प्रयोग हुआ है?

उत्तर-

निवाचक सर्वनाम 'आप' है, जिसका उपयोग निश्चय, निरकारण, सर्वसाधारण और अवधारणा के अर्थ में होता है।

मातृभूमि कविता में निजवाचक सर्वनाम (आप) का प्रयोग हुआ ही नहीं है।

प्रश्न 4.

निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें आसमान, धरती, समुद्र,

पेड़, माँ, दूध।

उत्तर-

[BiharBoardSolutions.com](http://BiharBoardSolutions.com)

- आसमान – गगन, व्योम, आकाश
- धरती – धरा, धरित्री, पृथ्वी, भूमि
- समुद्र-सागर, अर्णव, अम्बुपति
- पेड़ – वृक्ष, रुख, तरु
- माँ – माता, जननी
- दूध – पय

प्रश्न 5.

निम्नलिखित पंक्तियों से विशेषण चनें

उत्तर-

(क) और काले पंखों के नीचे कौवों के सफेद रोयें तक भीगते।  
विशेषण-काले, सफेद

(ख) तब चारों तरफ क्यों इतनी भाप फैल रही है गर्म रोटी की।  
विशेषण-इतनी गर्म।

(ग) धरती. का रंग हरा होता है, फिर सुनहला फिर धूसर।  
विशेषण-हरा, सुनहला, धूसर।

(घ) इनके भीगे केश सँवार दो अपने श्यामल हाथों से।  
विशेषण-भीगे, श्यामल।

(ङ) मेरे थके माथे पर हाथ फेरती तुम्हीं तो हो मुझे प्यार से तकती।  
विशेषण-थके।